NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

# जरबेरा की संरक्षित व्यवसायिक खेती

मेराज खान1, अमित कनौजिया[2],आशीष प्रताप सिंह[3], नीतेश कुमार[4] और रूचि वर्मा[5]

**परिचय:**

जरबेरा बहुवर्षीय तना रहित पौधा है। इसे डेजी जैसे पुष्प खिलते है। इसे बारवटन डेजी, ट्रांस्वाल डेजी , अफ्रीकन डेजी ,और हिल्टन डेजी के नाम से जाना जाता है । इसे मुख्य रूप से कट फ्लावर के लिय उगाया जाता है। इसकी उत्पत्ति स्थल अफ्रीका को माना जाता है जरबेरा को विश्व भर में लम्बी निधानी आयु के कारण, जरबेरा कर्तित पुष्प के रूप में विश्वभर मे लोक प्रिय है आदर्श रूप से इसे क्यारियों में रास्ते के किनारे गमलो मे उद्यानों मे लगाया जाता है। भारत में जरबेरा कट फ्लावर महाराष्ट्र, उत्तरांचल, अरुणाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक और गुजरात आदि उगाने वाले मुख्य क्षेत्र है।

जरबेरा के पूर्ण पौधो को चीन की पारम्परिक औषधी बनाने के उपयोग मे लाते है इसके अतिरिक्त इसका उपयोग बुके एवं गुलदस्ता बनाने में विभिन्न धार्मिक एक प्रेम सामाजिक कार्यों में सजावट के लिए किया जाता है

जरबेरा के पुष्प विभिन्न प्रकार के रंगो मे इण्डिया मे उपलब्ध है किसान भाई वैज्ञानिक विधि से इसकी खेती करके अधिक लाभ ले सकते है।

**जलवायु:**

जरबेरा उष्ण और समशीतोष्ण जलवायु में खुली जगहों पर लगाया जाता है, परन्तु शीतोष्ण जलवायु में इसे हरित घर (ग्रीन हाउस या पॉली हाउस) में लगाया जाता है। यह पौधा ठंडे मौसम में धूप पसंद करता है तथा गर्मी के मौसम में हल्की छाया की जरूरत होती है। जाड़े में खराब रोशनी से फूल कम खिलते हैं। गुणवत्तापूर्ण फूलों के उत्पादन के लिए छायादार घर (50%) या प्राकृतिक रूप से हवादार पॉलीहाउस की आवश्यकता होती है। दिन का तापमान 22-25°C और रात का तापमान 12-16°C आदर्श रहता है।

**मृदा**

जरबेरा लगभग सभी प्रकार की मृदाओ मे उगाया जा सकता है। जरबेरा के खेती के लिए हल्की क्षारीय मृदा, जिसमे खनिज तत्व प्रचुर मात्रा मे हो और जल निकास की उचित

**मेराज खान[1], अमित कनौजिया[2],आशीष प्रताप सिंह[3], नीतेश कुमार[4] और रूचि वर्मा[5]**

[1,3,4]स्नातकोत्तर विद्यार्थी, पुष्प विज्ञान एवं भूदृश्य निर्माण विभाग,

[2]सहायक अध्यापक, पुष्प विज्ञान एवं भूदृश्य निर्माण विभाग,

[5]स्नातकोत्तर विद्यार्थी, फस्लोत्तर प्रौद्योगिकी प्रबंध,

**बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा उ० प्र० - 210001**

प्रबंध हो तथा मृदा का पी० एच० 6-7 होना चाहिए।

**किस्में:**

| | |
|---|---|
| **लाल फूल वाली उन्नत किस्में** | **रूबी रेड, कांगो, कलकत्ता रेड, कैमिला** |
| **पीले फूल की किस्में** | अर्का क्रिशिका, ब्लैक हर्ट, कलकत्ता यलो, गोल्डन गेट, कलिम्पोंग, अलेस्मारा। |
| **नारंगी फूल की किस्में** | अलेगरो, सनवे, दुने, ऑरेंज ग्लमे। |
| **गुलाबी फूल की किस्में** | कलकत्ता पिंक, वेलेंटाइन, डस्टी, रोसलिन, मारा और सल्वाडोर |
| **क्रीमी और सफ़ेद फूल की किस्में** | विंटर क्वीन, कलकत्ता वाइट, प्राइड ऑफ़ सिक्किम, विंटर क्वीन, डेल्फी, व्हाइट मारिया और स्नोफ्लेक । |

**प्रवर्धन**

जरबेरा का प्रवर्धन बीज तथा वानस्पतिक भागों के द्वारा किया जाता है बीज द्वारा प्रवर्धन नयी जातियों को विकसित करने के लिये किया जाता है। वानस्पतिक विधि द्वारा प्रवर्धन करने से पहले पैतृक जैसे हो उत्पादित होता है इस विधि द्वारा जरबेरा का प्रवर्धन कलम्प विभाजन द्वारा किया जाता है कलम्प विभाजन विधि- द्वारा कम से कम समय मे बड़े पैमाने पर पौधो को तैयार नही किया जा सकता बड़े पैमाने पर रोगमुक्त पौधा उत्तक संवर्धन विधि द्वारा तैयार किया जाता है।

**खेत की तैयारी**

जरबेरा की उत्तम फसल लेने के लिए 2-3 बार गहरी जुताई करके खुले में छोड़ देना चाहिए जिससे इसमें उपस्थित हानिकारक कीट बिमारियो के अण्डाणु और खरपतवार धूप से नष्ट हो जाए।

**रोपण**

जरबेरा को पूरे वर्ष लगाया जा सकता है लेकिन रोपण के दो सामान्य समय है, पहला वसंत ऋतु मे यानी ( जनवरी - फ़रवरी)और दूसरा ग्रीष्म ऋतु में (जून - जुलाई) बीजों के अंकुरण के 5-6 सप्ताह बाद पौधो को रोपित करना चाहिए। फुमीगेशन विधि द्वारा बैड तैयार करने के साथ मिथाइल बरोमाइड 30 ग्राम प्रति वर्ग मीटर या फोरमेलिन 100 मि.ली.को 5 लीटर प्रति वर्ग मीटर पानी में मिलाकर मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारीयां जैसे कि पाईथीयम, फाइटोफ्थोरा, फ़ुज़ेरियम से बचाव किया जा सकता है।

**खाद एवं उर्वरक**

अधिक पुष्प उप्पादन के लिये पौधो का उचित पोषक तत्वो की आवश्यकता पड़ती है। खेत की तैयारी के समय, वर्मी कम्पोस्ट या अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 20 टन प्रति एकड़ और पोषक तत्वो जैसे नत्रजन,

फास्फोरस तथा पोटाश के लिए घुलनशील ग्रेडेड विभिन्न प्रतिशत वाले रासायनिक उर्वरक जैसे 13:13:13, 19:19:19 तथा 0:0:51 का इस्तेमाल किया जाता है। नत्रजन के लिए कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट का भी प्रयोग किया जाता है। इन उर्वरको या सूक्ष्म पोषक तत्व की मात्रा वर्तमान मे पौधो की वृद्धि एवं विकास के उपज पर निर्भर करता है।

**सिंचाई**

जरबेरा की खेती में पौधों की बढ़वार के लिए सिंचाई का विशेष महत्व है। सिंचाई की आवश्यकता मौसम के अनुसारकी जाती है। सर्दियों में 10-12 दिनों के अंतराल पर तथा गर्मियों में 6-7 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करते रहनी चाहिए। जरबेरा एक गहरी जड़ वाली फ़सल है सिंचाई करते समय एक बात का विशेष ध्यान रखे की जल भराव की स्थिति ना हो क्योंकि यह स्थिति पौधो के लिए हानिकारक है। हरित घर में लगे पौधे की सिंचाई टपकन विधि (ड्रीप सिंचाई पद्धति) से आवश्यकता अनुसार करते रहनी चाहिए।

**खरपतवार नियंत्रण एवं गुडाई**

अच्छे उत्पादन के लिये खेत को खरपतवार मुक्त होना अति आवश्यक है 15 दिन के अन्तराल पर 2 से 3 बार खुरपी से खरपतवारो को निकालना चाहिए रोपण के दिन पश्चात ही ट्राइफ्लूरिन नाइट्रोजन डाइफलेमि रसायनो के छिडकाव करे जिससे खरपतवार संख्या में कमी लाने मे सहायता होती है।

**फसल की कटाई**

जरबेरा पौधा लगाने के तीन महीना बाद फूल खिलना शुरू हो जाता है। फूलों को सुबह के समय या शाम के समय काटना चाहिए।

**भंडारण**

कटाई के बाद, जो सबसे अच्छे किस्म के फूल होते है उन्हें अलग और फिर उनसे आकार में फूल जो छोटे होते है फिर उन्हें रखते है। इसी तरह से अलग-अलग श्रेणी में रखा जाता है। जिससे की अच्छे किस्म के अच्छे कीमत मिले। फिर इन फूलो को गत्तों के बक्सों में पैक करके लम्बे समय की दूरी पर भेजा जाता है जहा फूल की अच्छी कीमत मिले।

**उत्पादन**

ग्रीन हाउस या पॉली हाउस में प्रति वर्ग मीटर में प्रति वर्ष 200-250 फूल का उत्पादन होता है। खुली जगहों पर 120-150 फूल/वर्ग मीटर/ वर्ष खिलते हैं।

**जरबेरा में लगने वाले रोग तथा कीट प्रबंधन**

**रूट रॉट**

यह एक कवक जानित रोग है इस रोग में जडो के नष्ट होने के कारण पौधे की वृद्धि और विकास धीरे- धीरे नष्ट होने लगते हैं।

इसके बचाव के लिए कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम 1लिटर पानी मे मिलाकर छिडकाव करे।

**पाउडरी मिल्डयू**

पाउडी का प्रकोप होने पर पत्तियो पे सफेद रंग का पाउडर पाया जाता है। इसके रोकथाम के लिए कैराथेन पानी मे घोलकर छिडकाव करना चाहिए।

**उकठा रोग**

इसके प्रभात से पत्तिया पीली पड़ जाती है इसके नियन्त्रण के लिये बाविस्टिन 01 - 03% धोलकर छिडकाव करना चाहिए।

**जरबेरा में लगने वाले कीट**

**थ्रिप्स**

ये पत्तियो का रस चूसकर उसे हानि पहुंचाते है इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान का छिड़काव 20 मिलीलिटर प्रतिलिटर पानी घोल करना चाहिए।

**व्हाइट फ्लाई।**

यह कीट पौधे के कोमल भाग उतको को नष्ट करती है जिससे पौधा कमजोर हो जाता है इसकी रोकथाम के लिए सार्प नामक कीटनाशक दवा को 0.3 ग्राम प्रतिलीटर छिड़काव करनी चाहिए।

**लीफमाइनर**

लीफमाइनर काला एवं पीले रंग का होता है जरबेरा पे इसका प्रकोप बहुत ही देखने को मिलता है। इसकी रोकथाम के लिए 1.0 मिली लीटर रोगर प्रति लीटर पानी में छिड़काव करना चाहिए।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE